"बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ"

JAYOTI VIDYAPEETH WOMEN'S UNIVERSITY, JAIPUR

FACULTY OF EDUCATION & METHODOLOGY

Faculty Name	:	JV'n Chanda kumawat
Program	:	Hindi languag
Course Name	:	B.A B.Ed 1 sem
Session No. & Name	:	2023 september

Academic Day starts with –

- Greeting with saying **'Namaste'** by joining Hands together following by 2-3 Minutes Happy session, Celebrating birthday of any student of respective class and **National Anthem**. \

Lecture Starts with- Review of previous Session

Unit-1

भाषा और साहित्य का इतिहास

हिंदी भाषा की उत्पत्ति -

हिन्दी का स्वरूप शौरसेनी और अर्धमागधी अपभ्रंशों से विकसित हुआ है। 1000 ई॰ के आसपास इसकी स्वतन्त्र सत्ता का परिचय मिलने लगा था, जब अपभ्रंश भाषाएँ साहित्यिक सन्दर्भों में प्रयोग में आ रही थीं। यही भाषाएँ बाद में विकसित होकर आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं के रूप में अभिहित हुईं।

हिंदी की परिभाषा -

विचारों कें आदान-प्रदान कों ही भाषा कहा जाता है। हिंदी भाषा की जननी संस्कृत भाषा ही है।

हिंदी भाषा की विकास यात्रा-

हिन्दी भाषा का इतिहास लगभग एक हजार वर्ष पुराना माना गया है। सामान्यतः प्राकृत की अन्तिम अपभ्रंश अवस्था से ही हिन्दी साहित्य का आविर्भाव स्वीकार किया जाता है। उस समय अपभ्रंश के कई रूप थे और उनमें सातवीं-आठवीं शताब्दी से ही 'पद्य' रचना प्रारम्भ हो गयी थी।'हिन्दी' वास्तव में फारसी भाषा का शब्द है, जिसका अर्थ है- हिन्दी का या हिंद से संबंधित। हिन्दी शब्द की निष्पत्ति सिन्धु-सिंध से हुई है। ईरानी भाषा में 'स' का उच्चारण 'ह' किया जाता था। इस प्रकार हिन्दी शब्द वास्तव में सिन्धु शब्द का प्रतिरूप है।

कालांतर में हिंद शब्द संपूर्ण भारत का पर्याय बनकर उभरा । इसी 'हिन्द' से हिन्दी शब्द बना।आज हम जिस भाषा को हिन्दी के रूप में जानते है, वह आधुनिक आर्य भाषाओं में से एक है। आर्य भाषा का प्राचीनतम रूप वैदिक संस्कृत है, जो साहित्य की परिनिष्ठित भाषा थी। वैदिक भाषा में वेद, संहिता एवं उपनिषदों-वेदांत ,वेंदाग भी का सृजन हुआ है। वैदिक भाषा के साथ-साथ ही बोलचाल की भाषा संस्कृत थी,जिसे लौकिक संस्कृत भी कहा जाता है। संस्कृत का विकास उत्तरी भारत में बोली जाने वाली वैदिककालीन भाषाओं से माना जाता है।

अनुमानत: 8 वी.शताब्दी ई.पू.में इसका प्रयोग साहित्य में होने लगा था। संस्कृत भाषा में ही रामायण तथा महाभारत जैसे ग्रन्थ रचे गए। इसका साहित्य विश्व के समृद्ध साहित्य में से एक है आगे चलकर,प्राकृत भाषाओं के क्षेत्रीय रूपों से अपभ्रंश भाषाएं प्रतिष्ठित हुई। इनका समय 500 ई.से 1000 ई.तक माना जाता है। अपभ्रंश भाषा साहित्य के मुख्यत: दो रूप मिलते है - पश्चिमी और पूर्वी । अनुमानत: 1000 ई.के आसपास अपभ्रंश के विभिन्न क्षेत्रीय रूपों से आधुनिक आर्य भाषाओं का जन्म हुआ। अपभ्रंश से ही हिन्दी भाषा का जन्म हुआ। आधुनिक आर्य भाषाओं में हिन्दी भी है। अनुमानत: तेरहवीं शताब्दी में हिन्दी भाषा में साहित्य रचना का कार्य प्रारम्भ हुआ,यही कारण है कि हजारी प्रसाद द्विवेदी जी हिन्दी को ग्राम्य अपभ्रंशों का रूप मानते है। आधुनिक आर्यभाषाओं का जन्म अपभ्रंशों के विभिन्न क्षेत्रीय रूपों से इस प्रकार माना जा सकता है "भारतीय भाषाओं में केवल हिंदी ही एक ऐसी भाषा है जिसे राष्ट्रभाषा के रूप में अपनाया जा सकता है क्योंकि यह अधिकांश भारतीयों द्वारा बोली जाती है; यह समस्त भारत में आर्थिक, धार्मिक और राजनीतिक सम्पर्क माध्यम के रूप में प्रयोग के लिए सक्षम है तथा इसे सारे देश के लिए सीखना आवश्यक है। संविधान सभा ने मत्रंणा के बाद 14 सितम्बर सन् 1949 को हिन्दी को भारत की राजभाषा स्वीकारा गया। भारत कें राजकाज कें कार्यो में प्रयुक्त की जाती है इसके बाद संविधान में अनुच्छेद 343 से 351 तक राजभाषा के सम्बन्ध में व्यवस्था की गयी। इस दिन कों तब सें प्रतिवर्ष यादगार बनानें कें लिए 14 सितम्बर हिन्दी दिवस के रूप में मनाया जाता है। ध्यातव्य है कि भारतीय संविधान में राष्ट्रभाषा का उल्लेख नहीं है। लेकिन हिंदी भारत कें अधिकांश भागों में ,विविध रुप में बोलियॉ बोली जाती हैं।

भाषा की विशेषताएं -

भाषा परिवर्तनशील है।

- भाषा की क्षेत्रीय सीमा होती है।
- भाषा सरलता एवं प्रौढ़ता की दिशा में सतत् गतिशील होती है।
- समाज के सांस्कृतिक विकास एवं पतन के साथ भाषा के विकास एवं पतन भी जुड़े होते हैं।
- भाषा मानव व मानवेंतर सम्प्रेषण का माध्यम हैं।
- भाषा की आधारभूत ईकाई ध्वनि हैं।
- भाषा लेखन की लिपियॉ भी अलग-अलग हैं लेकिन हिंदी भाषा की लिपि देवनागरी हैं।
- परंतु हिंदी की लिपि देवनागरी मानक रुप में हैं।

हिंदी भाषा की स्वरुप

- लौकिक संस्कृत व वैदिक संस्कृत

हिंदी के प्रमुख भाग-

हिन्दी में उच्चारण के आधार पर 52 वर्ण होते हैं। इनमें 11 स्वर देवनागरी लिपि कें अनुसार व 13 मूल स्वर होते हैं ।

33 व्यंजन वर्ण व 4 संयुक्त वर्ण श्र,त्र,क्ष,ज्ञ

हिंदी भाषा शिक्षण के उद्देश्य -

हिंदी भाषा शिक्षण का मूल उद्देश्य जैसे सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना, व्यावहारिक व्याकरण का ज्ञान, भाषा प्रयोग तथा सृजनात्मकता का विकास की पूर्ति इस शिक्षण से किया गया है।